5

जीवन्त एवं स्मरण द्वारा स्केचिंग
(Sketching from Life and Memory)

5.0 भूमिका

बिना चित्र की पुस्तक एवं बिना पेंटिंग की दीवार, आभूषणहीन दुल्हन की तरह लगती है। स्केच, मेटिंग व ड्राइंग का आधार है। जिस प्रकार शरीर को खड़ा रखने, उसे सुडौल एवं आकर्षक दिखाने का काम रीढ़ की हड्डी करती है उसी तरह पेन्टिंग व ड्राईंग का आधार स्केच है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों के सामने अभिव्यक्त करने के लिए किसी न किसी माध्यम का सहारा लेता है जैसे–लिखकर, बोलकर, नाचकर, गाकर एवं चित्र बनाकर। विद्यार्थी पहले स्केच द्वारा ही आड़ी–तिरछी रेखाएँ खींचकर अपनी खुशी या दुख को व्यक्त करता है। आगे चलकर उसे चित्र या पेंटिंग्ज बनाने की चाहत होती है। अपनी भावनाओं और विचारों को साकार करने की पहली सीढ़ी है स्केच। इस पाठ में स्केच के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है कि किस तरह आसान तरीकों से किसी भी वस्तु की बनावट और आकार को स्केच द्वारा सरल किया जा सकता है जो विद्यार्थी के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। इस पाठ में दिए गए स्केच के आधार पर विद्यार्थी अभ्यास करके ड्राइंग और पेंन्टिग में अपनी कल्पना शक्ति, रचनात्मक क्षमता एवं अपने कौशल का विकास कर सकेगा।

5.1 उद्देश्य:

इस पाठ के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी इस योग्य होंगे कि वे :–

- विभिन्न प्रकार के स्केच बना सकते हैं,
- स्केच द्वारा किसी भी वस्तु की आकृति बना सकते हैं और उसकी व्याख्या कर सकते हैं।

5.2 स्केचिंग की परिभाषा (Definition of Sketching)

स्केचिंग ड्राईंग की पूर्व अवस्था है जिसमें कलाकार स्वतंत्र एवं उन्मुक्त रूप से रेखांकन करता है जिसमें बाह्य आकृति के लिए कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता, न ही कोई अनुपात को मापने की विधि अपनाई जाती है। (चित्र 5.1, 5.2)

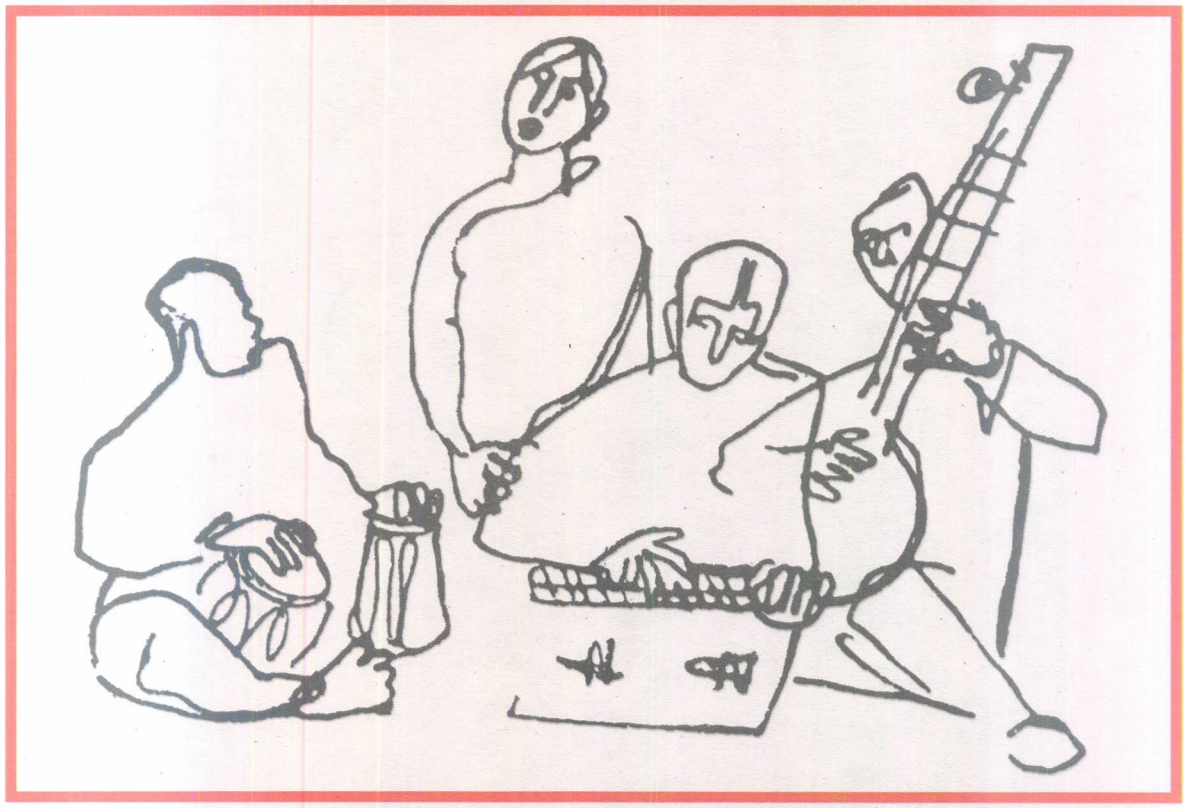

चित्र 5.1

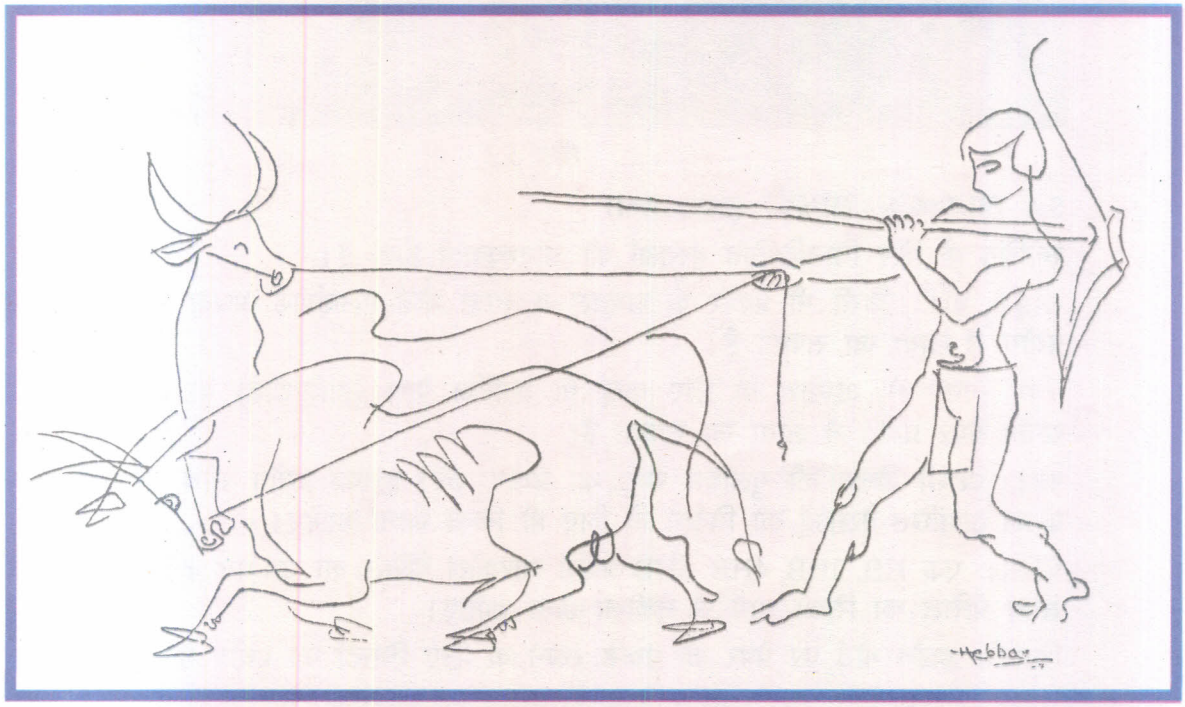

चित्र 5.2

5.3 ड्राईंग की परिभाषा (Definition of Drawing)

ड्राईंग संसार को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने का एक माध्यम है। ड्राईंग अपने आस–पास की वस्तुओं व प्राप्त अनुभवों का लेखा–जोखा (रिकार्ड) रखने का एक माध्यम है। अपने विचारों का विश्लेषण करने और समझाने के लिए ड्राईंग का प्रयोग किया जाता है।

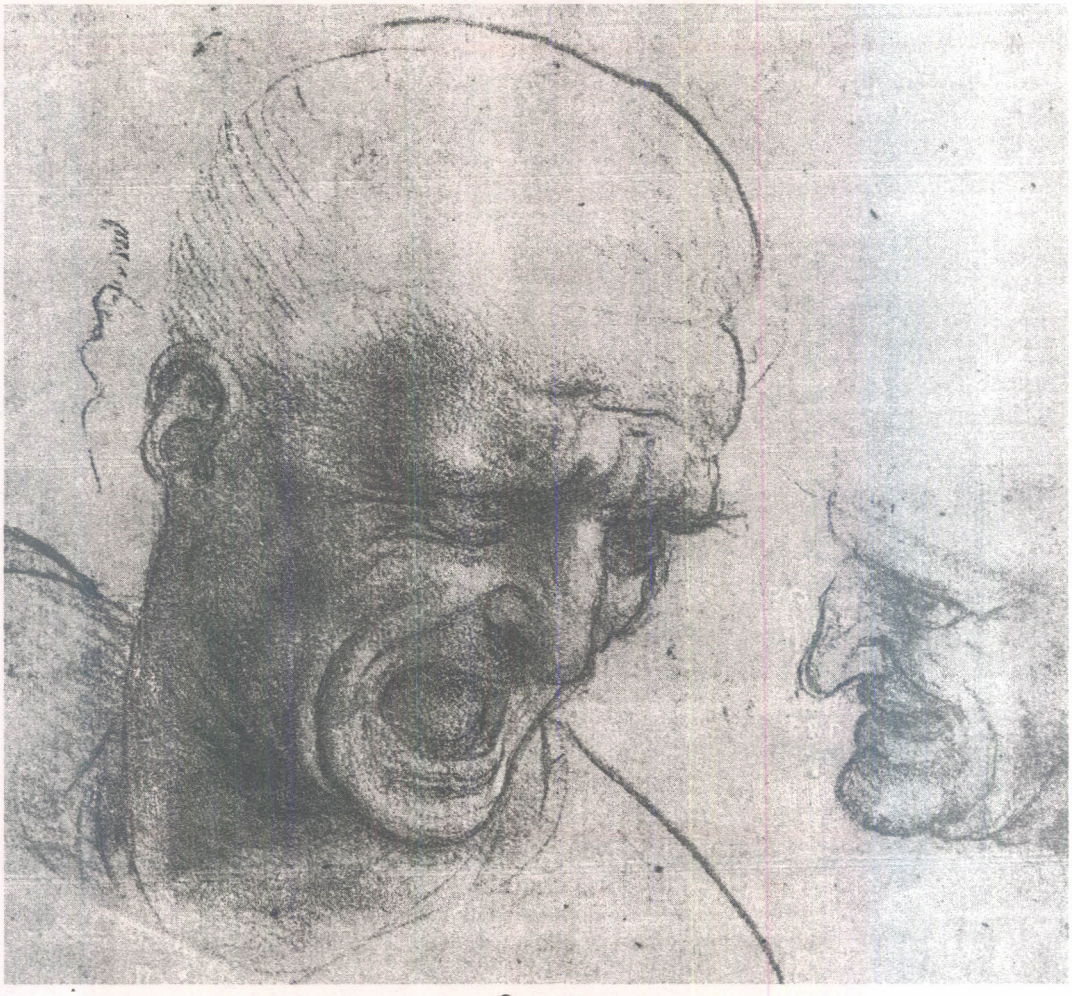

चित्र 5.3

5.4 आवश्यक सामग्री (Material)

स्केचिंग के लिए निम्नलिखित वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

ड्राईंग बोर्ड: किसी भी प्रकार के समतल व सख्त बोर्ड (प्लाईबोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड) को प्रयोग में लाया जा सकता है।

पेपर (कागज): अभ्यास के लिए कोई भी कार्टिज पेपर (ड्राईंगशीट) या अन्य कोई भी सफेद पेपर प्रयोग में लाया जा सकता है।

रबड़: अच्छी किस्म की मुलायम रबड़ का प्रयोग करें। इसका प्रयोग सोच समझकर और केवल अवांछित रेखाओं को मिटाने के लिए ही किया जाना चाहिए।

पेंसिल: एक HB, 2HB, 4HB, 6HB अथवा चारकोल पेंसिल का उपयोग करें। स्केच करते समय पेंसिल का सिक्का आगे से नुकीला होना चाहिए।

चिमटी: ड्राईंग बोर्ड पर पेपर की पकड़ रखने के लिए चिमटी का प्रयोग करें।

5.5 स्केचिंग का तरीका (Methods of Sketching)

- **पेंसिल को कैसे पकड़ें:** गहरी व बेकार रेखाओं द्वारा पेपर खराब करने का मुख्य कारण है गलत ढंग से पकड़ी गई पेंसिल। कठिनाई वहां उत्पन्न होती है जहां लिखने की आदत होने के कारण बच्चों को केवल उंगलियों को चलाने का अभ्यास होता है जबकि ड्रांईग करते समय पेंसिल को कलाई व हाथ से हिलाना होता है। पेंसिल को सिक्के की नोक से कम से कम 2 इंच की दूरी से पकड़ना चाहिए। यह दूरी हाथ के आकार व खींची जाने वाली रेखा की लम्बाई पर निर्भर करती है।
- **रेखाओं का महत्त्व:** स्केच करने से पूर्व विद्यार्थियों को तरह–तरह की रेखाएं खींचने का भी अभ्यास करना अति आवश्यक है जिससे कि स्केच करते समय रेखाओं में गति एवं पैनापन रहे। इन रेखाओं में प्रमुख हैं–खड़ी रेखाएं, पड़ी रेखाएं, आड़ी–तिरछी रेखाएं व वक्रीय रेखाएं। इन रेखाओं का उदाहरण अभ्यास रेखांकन में दिया गया है जिसे देखकर रेखाओं के बनाने का अभ्यास किया जा सकता है।
- **अनुपात की समझ:** एक वस्तु के दूसरी वस्तु से तुलनात्मक संबध को अनुपात कहा जाता है। स्केच करते समय मानवाकृति, पशु–पक्षी, फूल–पत्ती, पहाड़ एवं जंगल आदि सभी को अनुपात के साथ देखना आवश्यक है।

  आकृति को पेपर पर स्थापित करना बड़ा आसान व साफ प्रतीत होता है लेकिन शिक्षार्थी को अपने दिमाग में मानवाकृति व वस्तु के मूल अनुपात को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। मानवाकृति की लम्बाई का मूल अनुपात लगभग 7 सिर माना गया है। ठुड्डी से ललाट तक की दूरी को माप की एक इकाई माना गया है। मानव के शरीर की लम्बाई जन्मगत व प्राकृतिक तथा भौगोलिक स्थितियों के द्वारा प्रभावित होती है। (चित्र 5.4 क, ख)

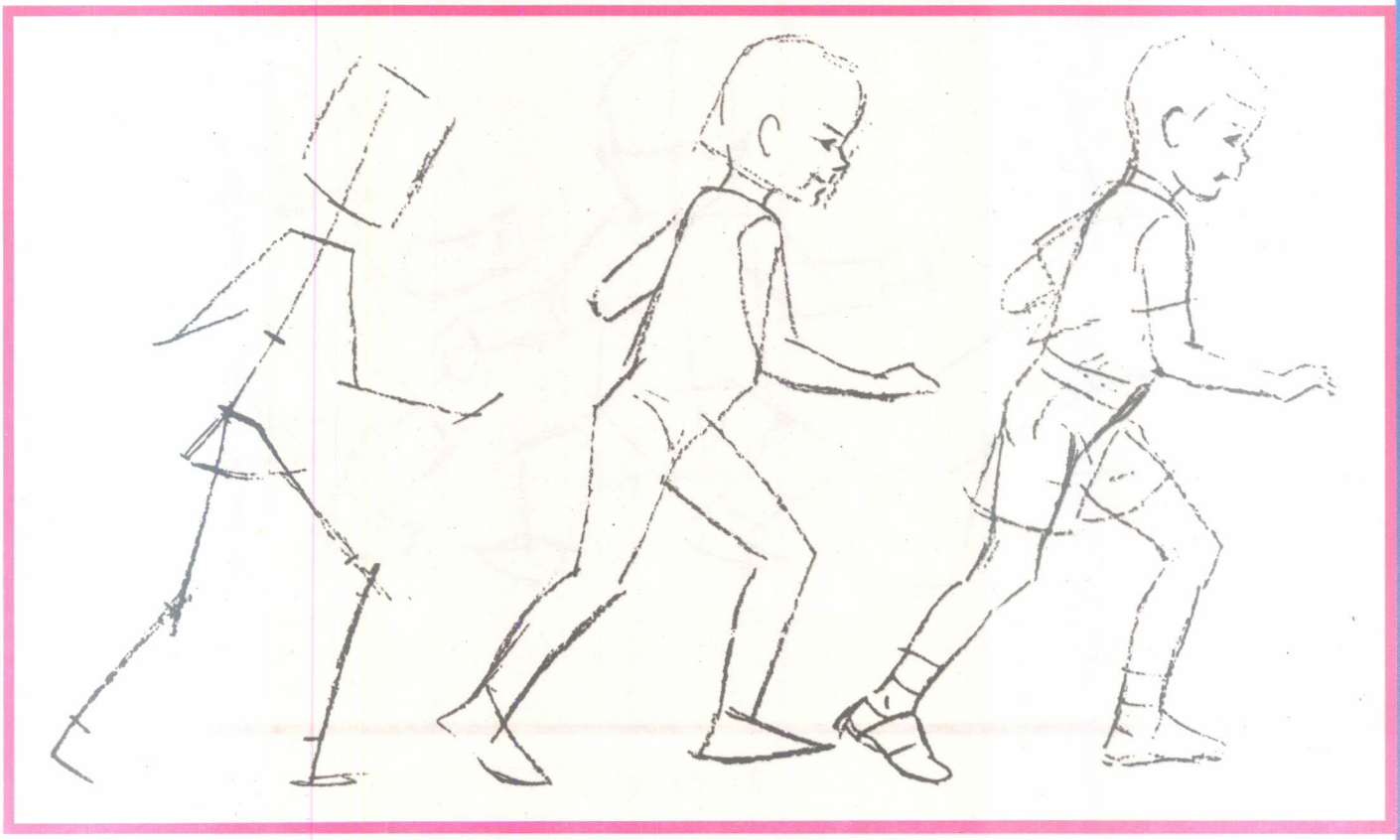

चित्र 5.4 (क)

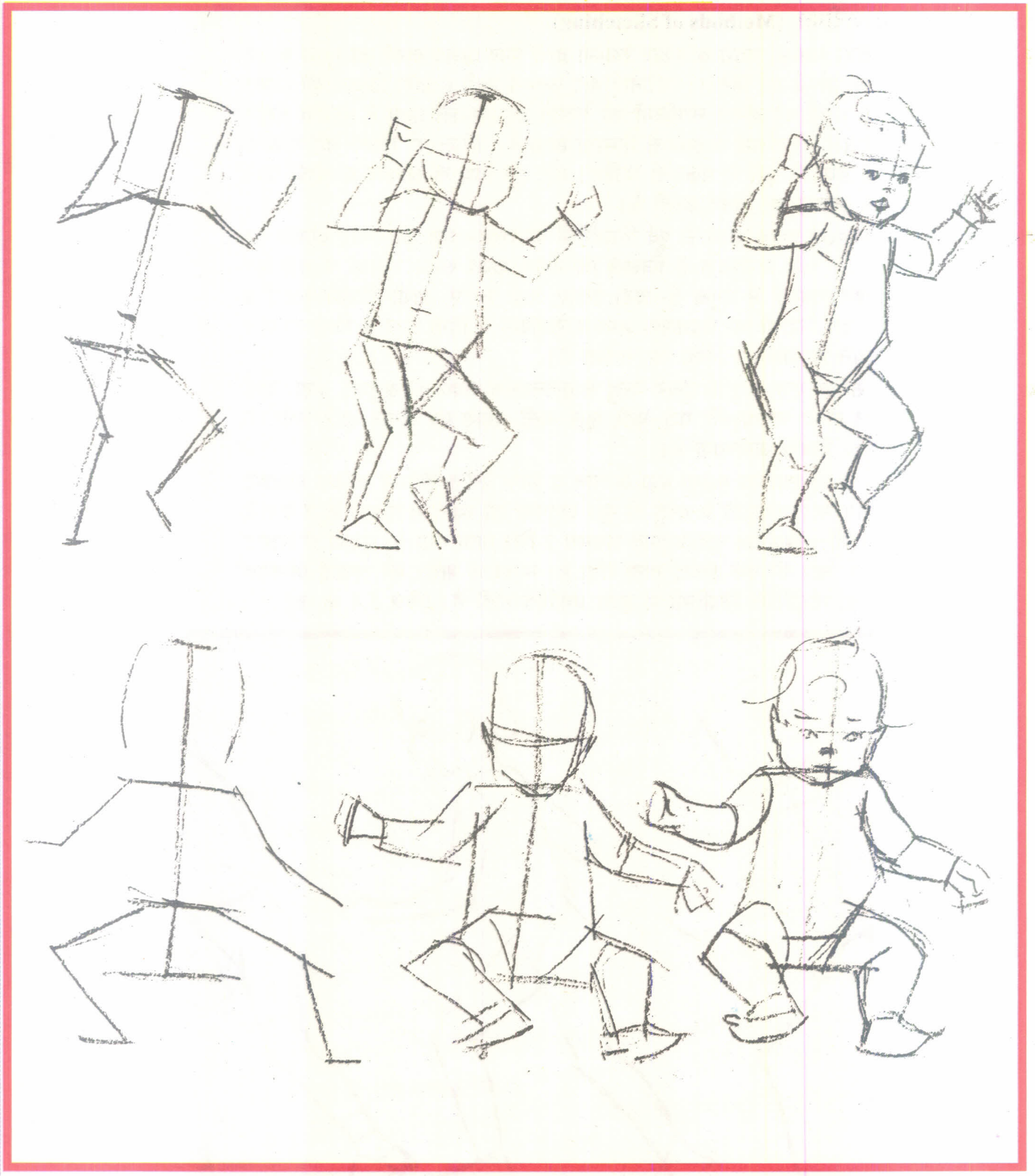

चित्र 5.4 (ख)

- **लक्षित वस्तु का स्थान–निर्धारणः (Placing the object)** वस्तु के नजदीक बैठकर अपनी दृष्टि उस वस्तु के बाह्य आकार (आउट लाईन) पर केन्द्रित करें। पेपर पर पेंसिल को रखकर कल्पना करें कि आपकी पेन्सिल उसे सचमुच छू रही है। पेंसिल को हल्के ढंग से पकड़ें। ब्लाकस् (Blocks) की विधि को अपनायें जैसा कि अभ्यास रेखांकनों में दर्शाया गया है। (चित्र 5.5 क, 5.5 ख, 5.5 ग, 5.5 घ)

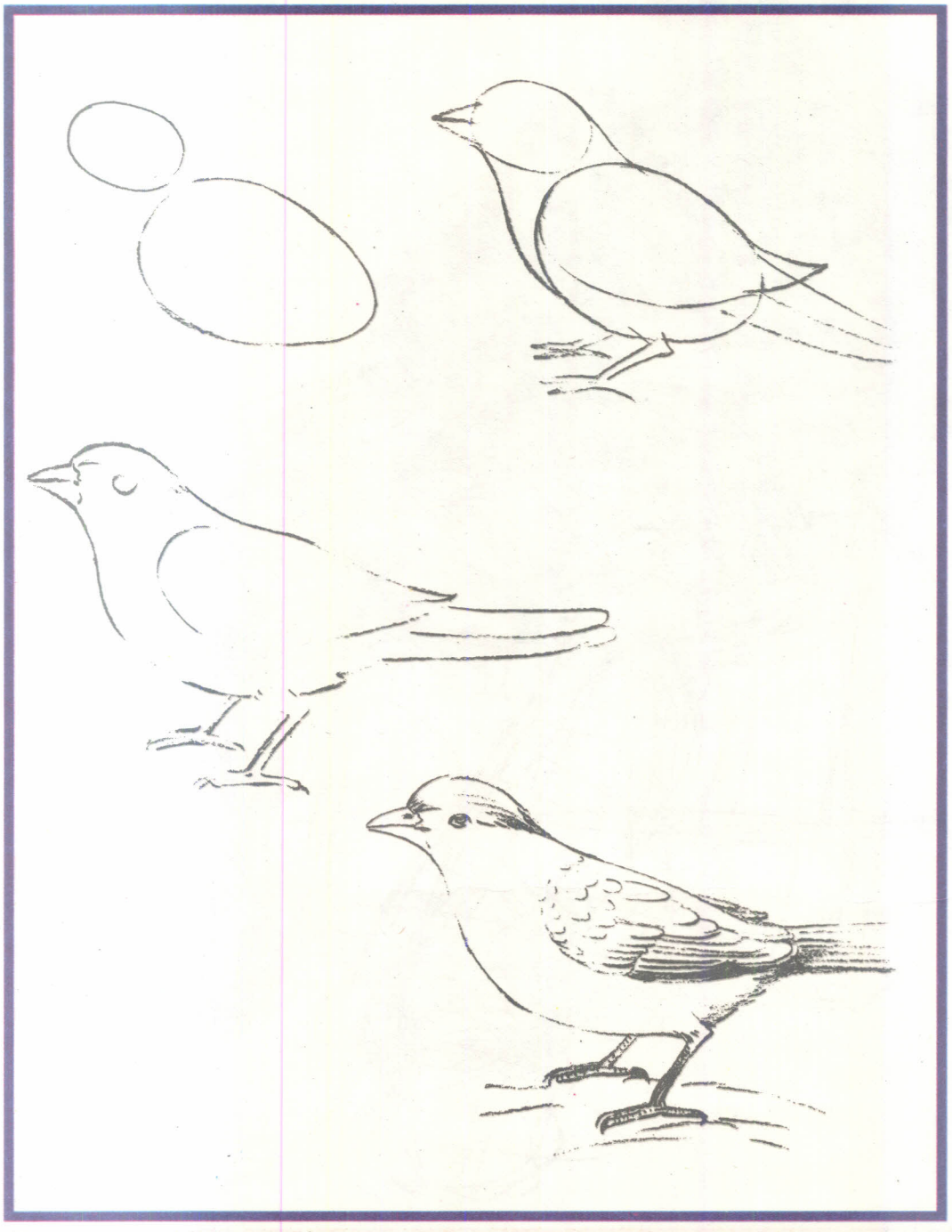

चित्र 5.5 (क)

चित्र 5.5 (ख)

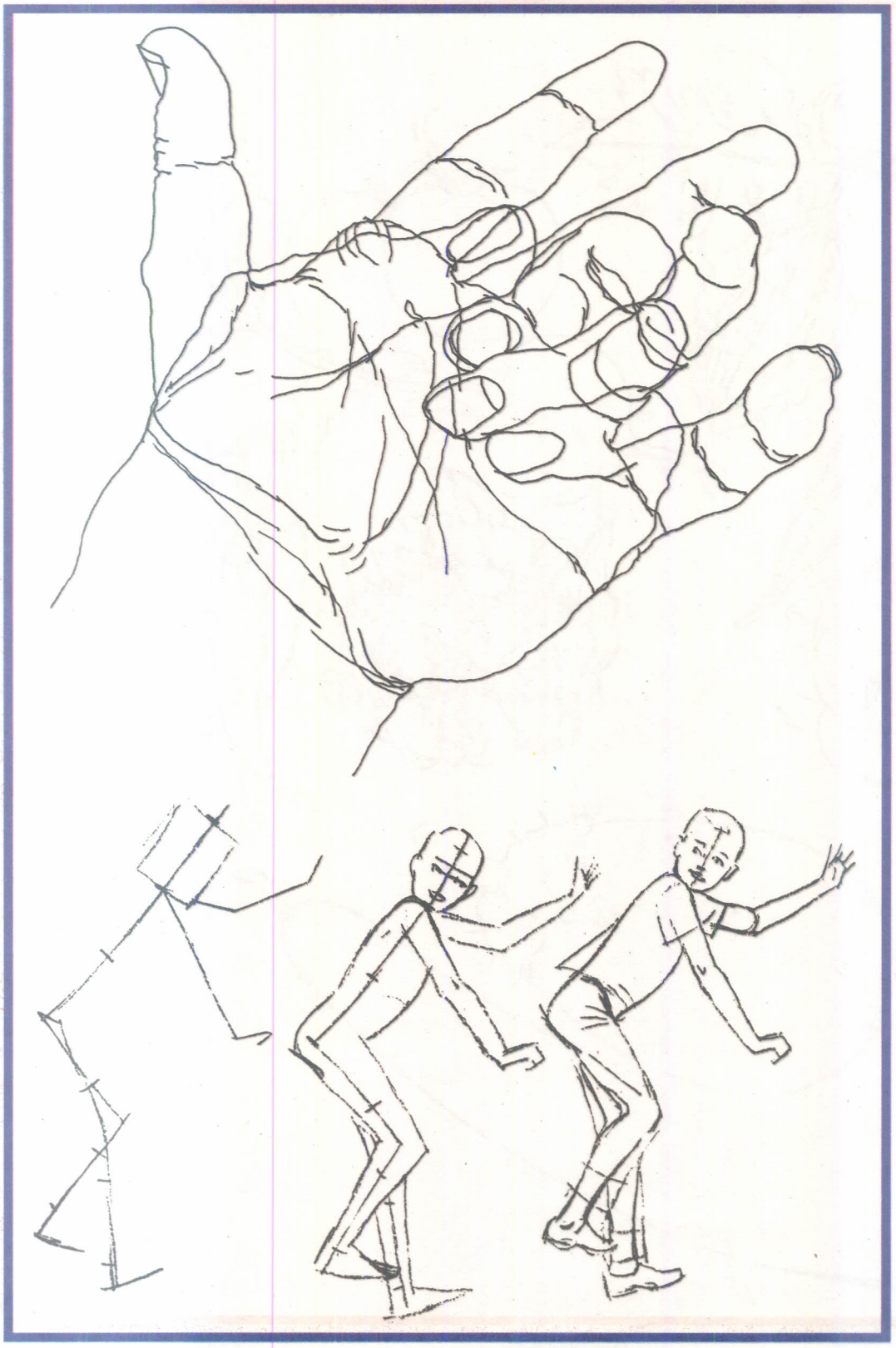

चित्र 5.5 (ग)

चित्र 5.5 (घ)

5.6 स्मृति के द्वारा स्केचिंग (Sketching from Memory)

विद्यार्थी मुख्यतः स्मृति के माध्यम से स्केचिंग करना पसन्द करते हैं चाहे उन्हें देखकर बनाने के लिए कहा जाये। वे विषय के बारे में स्मृति के माध्यम से कुछ भी प्रस्तुत कर देते हैं। इस प्रकार की कृति सृजनात्मक होगी न कि नकल क्योंकि वे स्मृति के माध्यम से विषय को अपने तरीके से रूपांतरित करते हैं। (चित्र 5.6, 5.7, 5.8, 5.9)

यदि आपको एक गुलदस्ता स्मृति के माध्यम से बनाना है तो पहले उसे देखिये और फिर आँखें बन्द करके दिमाग के द्वारा उस आकृति की कल्पना कीजिए। वह कैसा दिखता है? इस माध्यम से दृष्टिगत प्रवीणता तथा सृजनशीलता दोनों ही बढ़ेगी।

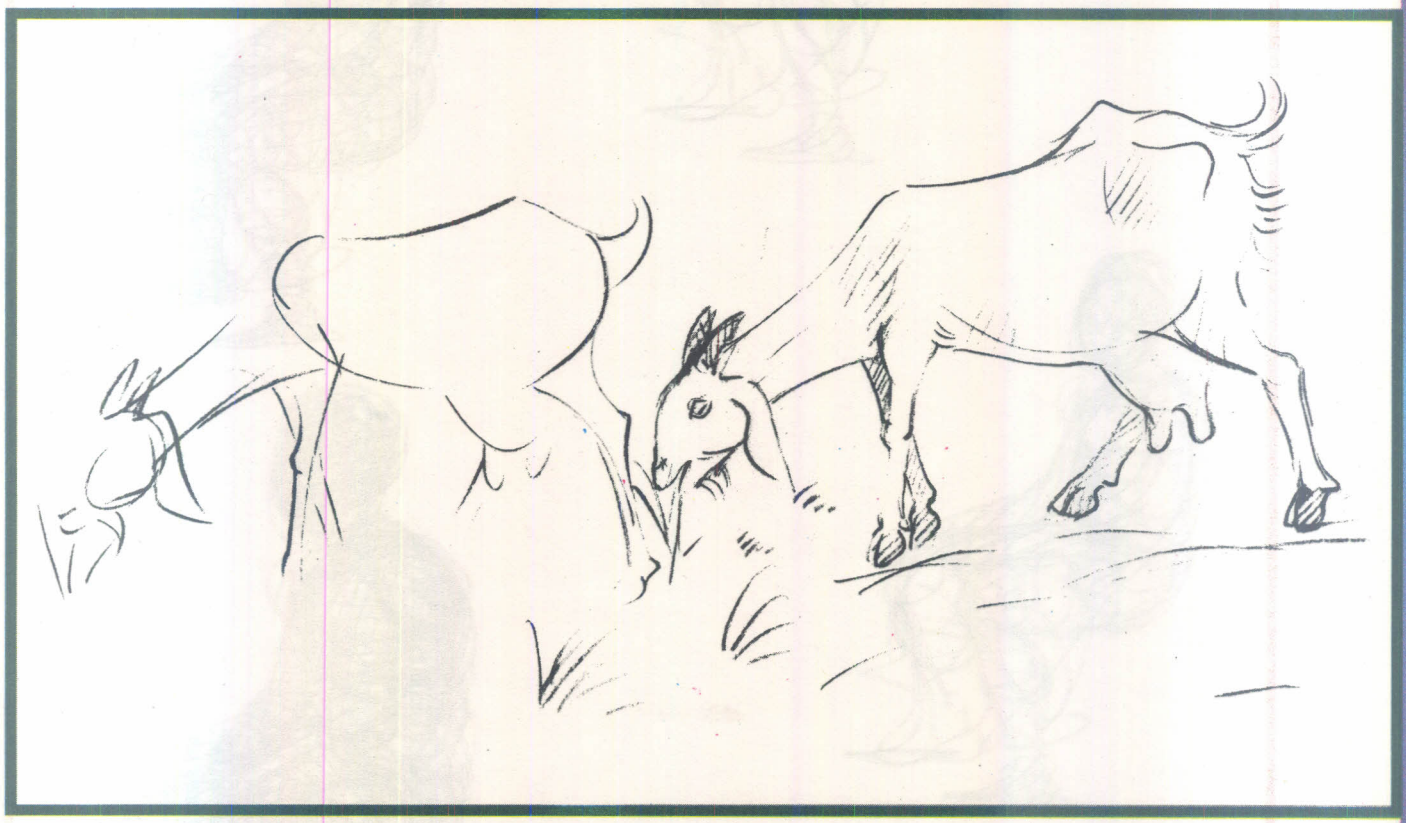

चित्र 5.6

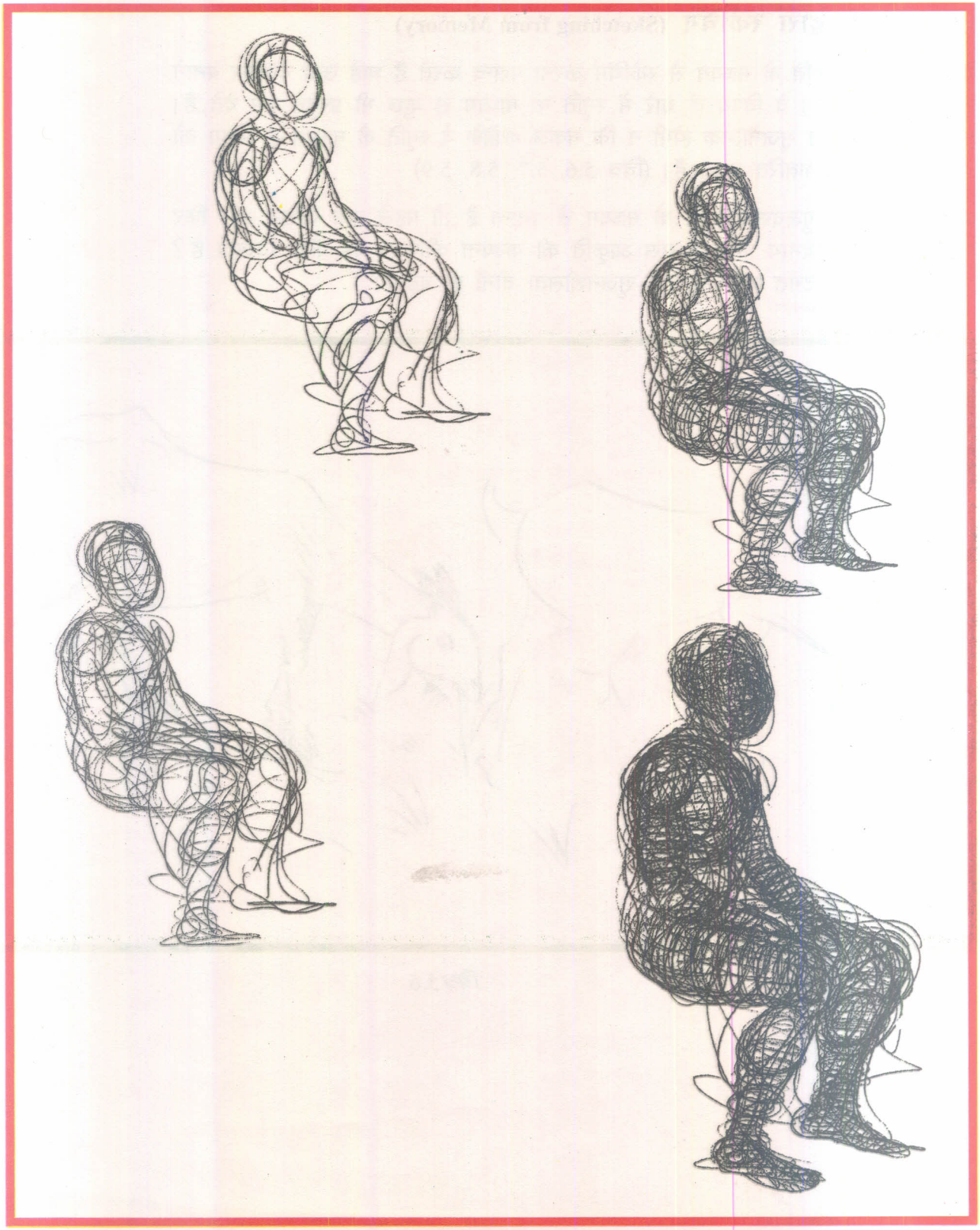

चित्र 5.7

चित्र 5.8

चित्र 5.9

चित्र 5.10

5.7 सारांश

किसी की भावनाओं और उसके विचारों को जानने के लिए स्केचिंग पहला कदम है। अभ्यास करने पर शिक्षार्थी अपनी कल्पना को साकार रूप दे सकता है। स्केचिंग के लिए जो आवश्यक सामग्री है, वह है ड्राईंग बोर्ड, रबर, पेंसिल और क्लिप। शिक्षार्थी को स्केचिंग कैसे किया जाता है, यह जानना आवश्यक है जैसे पेंसिल को कैसे पकड़ते हैं, विभिन्न प्रकार की रेखाएं कैसे खींची जाती हैं, विभिन्न वस्तुओं को सही और उचित अनुपात में कैसे देखा जाता है, उन्हें उचित स्थान पर कैसे रखा जाता है और स्परण द्वारा स्केचिंग कैसे किया जाता है।

5.8 मॉडल प्रश्नः

1. पाठ में दिये सब्जियों के स्केचिंग्ज के माध्यम से संयोजन करें।
2. मानव की शरीर रचना के दिये गये स्केचिंग्ज का अभ्यास करें।
3. अपने पालतू जानवर के स्केच बनायें।
4. घर के अन्दर की वस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखें और उनको बाद में स्मृति के माध्यम से चित्रित करें।
5. घरेलू बाजार के दृश्य को स्मृति के द्वारा अंकित करें।

5.9 शब्दावली

रेखाः वह सांकेतिक चिन्ह है जो कि गति को दर्शाता है तथा हमारी आँख के द्वारा नापा जाता है।

तानः काले व सफेद रंग के मध्य की रंगत को *तान* कहते हैं।

रूपः वह क्षेत्र जो रंग या रेखाओं से घिरा रहता है, *रूप* कहलाता है।

अन्तरालः वह क्षेत्र जिस पर कलाकार अपनी कलाकृति के रूप को सीमित करता है, *अन्तराल* कहलाता है।